

✓ भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य आरती हो रही है।

गहरायी से अध्ययन किया था और मानव भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२°/२ जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन और हमारी आकाश गंगा के एक खरब में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान चक्रकर लगाते हैं। भाव वह निकला, कि देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा है वह भी विनप्रता पूर्वक (झुककर)। इसे पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह कह सकते हैं, कि प्रकृति में सर्वश्रु सतत

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवं श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है;

ऐसी भावना का सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

2

Niti, March, 1999

✓ भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य आरती हो रही है।

गहरायी से अध्ययन किया था और मानव भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२°/२ जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन और हमारी आकाश गंगा के एक खरब में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान चक्रकर लगाते हैं। भाव वह निकला, कि देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा है वह भी विनप्रता पूर्वक (झुककर)। इसे पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह कह सकते हैं, कि प्रकृति में सर्वश्रु सतत

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

2

Niti, March, 1999

✓ भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य आरती हो रही है।

गहरायी से अध्ययन किया था और मानव भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२°/२ जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन और हमारी आकाश गंगा के एक खरब में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान चक्रकर लगाते हैं। भाव वह निकला, कि देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा है वह भी विनप्रता पूर्वक (झुककर)। इसे पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह कह सकते हैं, कि प्रकृति में सर्वश्रु सतत

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

2

Niti, March, 1999

भगवान की आरती व्यों?

भारतीय भौतिकों ने प्रकृति का नड़ी गहरवी से अद्ययन किया था औ मानव जीवन को प्रकृति के अनुसूच ठोलने का प्राप्त ब्रह्मात् किया था, ताकि जीवन में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने आकाशीय पिण्डों के इद्ययन के दौरान देखा, जिसमें अपनी वस्ता पर 5° झुककर पृथ्वी की सतत परीक्षा बताई है एवं पृथ्वी की $23\frac{1}{2}^{\circ}$ अपनी वस्ता पर झुकी हुई सूर्य की परीक्षा निरन्तर जली रहती है। इसी प्रकार सभी यह भी सूर्य की परीक्षा करते हैं तथा सूर्य की आकाशगंगा के केन्द्र की $22\frac{1}{2}^{\circ}$ घोड़ वर्षी में एवं परीक्षा जलाती है औ इसी आकाशगंगा के एवरेंट द्विधिन सूर्य की निर्तता के बहु का चक्र कर लगते हैं। आब यह निलला, कि हर दोषार्थोति पिण्ड आपने से बड़े ज्योति पिण्ड की सतत परीक्षा जलाती है वही विनाशक पूर्वक (झुककर)। इसे यदि साहित्य की भाषा में बहुतों द्वारा यह कह सकते हैं, कि प्रकृति में सर्वतः सतत आर्ती हो रही है।

प्रकृति की इसी किया का अनुगमन करते हुए आर्ती को ले समय भावना यह होनी पाहिए, कि आर्ती की ज्योति में आर्ती बहुते नाले की आत्मा, उस परायोति ब्रह्म की आदर एवं अद्वा पूर्वक परीक्षा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से इतिहासी अनुशूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आर्ती का विद्यान बनाया गया था।

निर्जला युता
नी-340 लोक विहार
परिमुक्त युवा विलो-34